## लॉक का गुण-विचार

लॉक के अनुसार गुण वे शक्तियाँ हैं जो भौतिक द्रव्य में हैं और आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी हैं। उसके अनुसार गुण मुख्यतः दो प्रकार के हैं - मूल गुण (Primary quality) तथा उप गुण (Secondary quality).

मूल गुण द्रव्य के वे गुण हैं जो अनिवार्य या अवियोज्य रीति से उसी में रहते हैं, जैसे - आकार, गति, विस्तार इत्यादि। मूल गुण हमारी आत्मा में मूल गुणों के प्रत्ययों को जन्म देते हैं। ये प्रत्यय मूल गुणों के प्रतिबिम्ब ही होते हैं और उनके कार्य भी। लॉक का दावा है कि मूल गुणों के प्रत्यय मूल गुणों के प्रतिनिधि होते हैं और यहीं से उसका प्रतिनिधानवाद जन्म लेता है।

उपगुण वस्तुतः द्रव्य में नहीं हमारे मन में रहते हैं किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि हमारा मन ही उन्हें उत्पन्न करता है। मूल गुण असंवेद्य होते हैं जबकि उप गुण संवेद्य जैसे - रूप, रस, गंध, रंग। उपगुण हमारे मन में उपगुणों के प्रत्ययों को जन्म देते हैं। ये प्रत्यय उपगुणों के पूर्ण प्रतिनिधि तो नहीं होते किंतु संकेत अवश्य करते हैं।

मूल गुणों व उप गुणों में अन्तर यह है कि मूल गुण द्रव्य में रहते हैं तथा उप गुण हमारे मन के भीतर। मूल गुण वस्तु को खण्डित करने पर भी अनिवार्य रहते हैं किंतु उप गुण नहीं। मूल गुण बिना उपगुणों के संभव हैं किंतु उपगुण बिना मूल गुणों के सम्भव नहीं। मूल गुणों के प्रत्यय मूल गुणों के प्रतिनिधि होते हैं जबकि उपगुणों के प्रत्यय संकेत मात्र करते हैं।

लॉक ने एकाध स्थान पर तृतीयक गुण की भी चर्चा की है। उसके अनुसार ये वे शक्तियाँ हैं जो किसी भौतिक पिण्ड में इस प्रकार परिवर्तन पैदा करती हैं कि हमारे मन में उप गुण का एक नया प्रत्यय पैदा हो जाता है, जैसे - सूर्य की उपस्थिति में बर्फ का पिघलना।

---

गुण सिद्धांत की कई आलोचनाएँ की जाती है। प्रथम मूल गुण व उपगुण का अंतर भ्रामक है क्योंकि अनुभववाद के आधार पर यह अंतर अस्वीकार्य है। पुनः यदि द्रव्य अज्ञेय है तो लॉक कैसे जानता है कि मूल गुण द्रव्य में होते हैं। मूल गुणों के प्रत्यय मूल गुणों के प्रतिबिम्ब हैं - यह विचार भी अनुभववादी पद्धति से सिद्ध नहीं हो सकता। ये सारे दोष वस्तुतः इसलिए पैदा हुए क्योंकि लॉक अपने अनुभववाद को वस्तुवाद से सुसंगत बनाना चाहता है।

## लॉक का मूल्यांकन :

लॉक का महत्व पश्चिमी दर्शन में इस रूप में है कि उसने ① ज्ञान मीमांसा को दर्शन के केन्द्र में स्थापित किया जबकि उससे पूर्व तत्वमीमांसा दर्शन के केन्द्र में थी। यह प्रभाव आगेचलकर पश्चिमी दर्शन की केन्द्रीय प्रवृत्ति बन गया। इसे ह्यूम, काँट तथा समस्त समकालीन दर्शन में देखा जा सकता है।

② लॉक के दर्शन का प्रभाव मुख्यतः काण्ट के दर्शन पर पड़ा। लॉक ने ज्ञान को अनुभवों पर आधारित माना तो काण्ट ने भी ज्ञान की शुरुआत अनुभव से मानी। लॉक ने कहा कि हम द्रव्य को नहीं जान सकते और काण्ट ने भी संस्कृति व परमार्थ का भेद स्वीकारा।